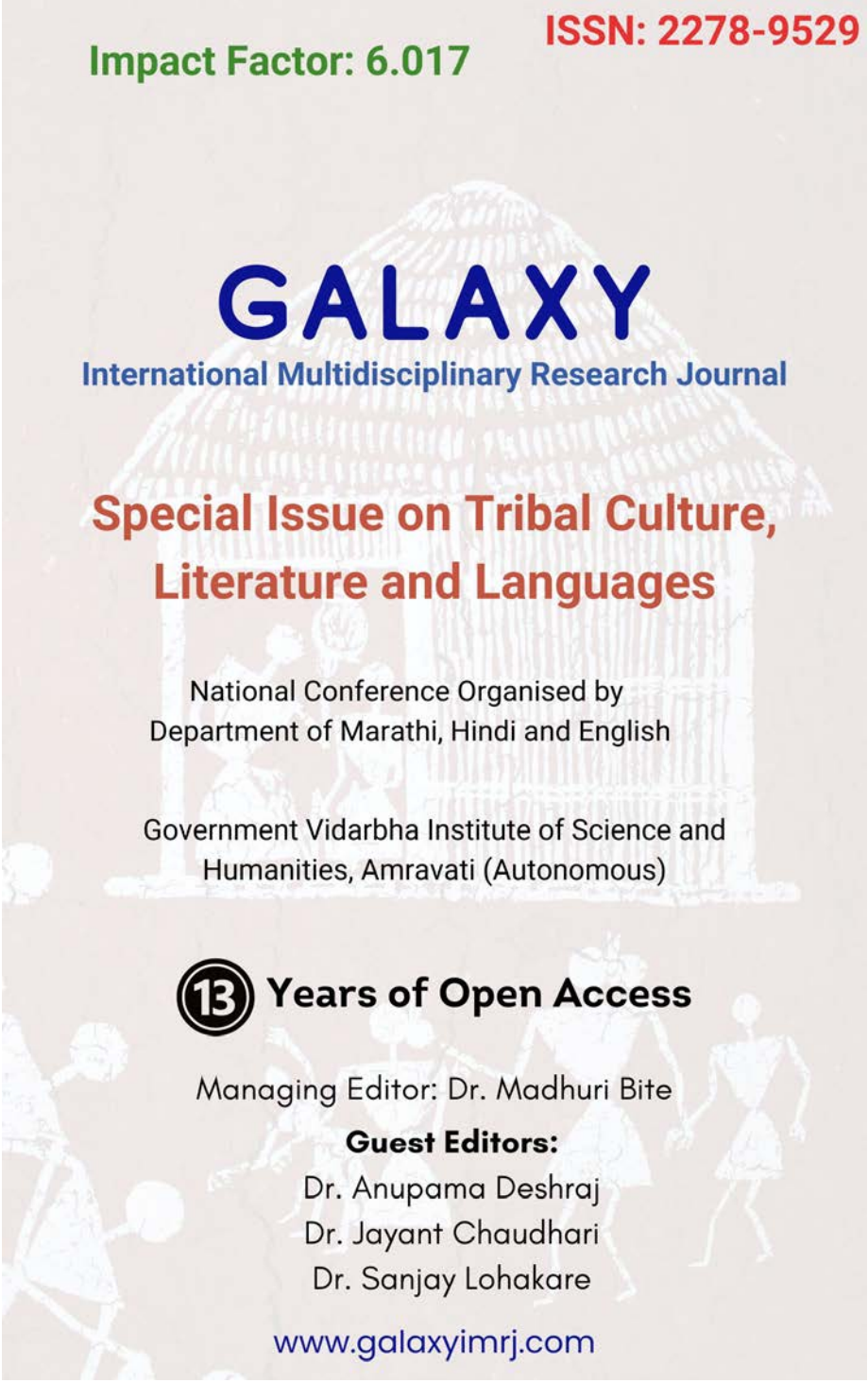

About Us: http://www.galaxyimrj.com/about-us/
Archive: http://www.galaxyimrj.com/archive/
Contact Us: http://www.galaxyimrj.com/contact-us/
Editorial Board: http://www.galaxyimrj.com/editorial-board/
Submission: http://www.galaxyimrj.com/submission/
FAQ: http://www.galaxyimrj.com/faq/

आदिवासी 'महादेव कोली' समुदाय के देवी- देवताएँ: प्रकृति संवर्धन के प्रतीक

शेळके नितीन
वनस्पतीशास्त्र विभाग,
महाराष्ट्र शासन का इस्माईल युसूफ कला , वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय जोगेश्वरी मुंबई . ६०
जाधव अलका
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
प्रोफेसर रामकृष्ण मोरे कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
आकुर्डी – पुणे.

सारांश

भारत की विविध आदिवासी संस्कृतियों में महादेव कोली जनजाति का महत्वपूर्ण स्थान है। महाराष्ट्र के पहाड़ी और वन क्षेत्र में बसे ये आदिवासी अपने विशिष्ट धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय मान्यताओं के लिए जाने जाते हैं। महादेव कोली समुदाय के देवी-देवताएँ प्रकृति संवर्धन और संरक्षण के प्रतीक माने जाते हैं, जो उनके धार्मिक आस्थाओं और परंपराओं में निहित हैं।

महादेव कोली समुदाय के देवता और देवियाँ मुख्यतः प्रकृति के तत्वों के साथ जुड़े होते हैं। ये देवता और देवियाँ न केवल धार्मिक आराधना के केंद्र हैं, बल्कि निसर्ग के प्रति आदिवासी समाज की आस्था और संरक्षण के प्रतीक भी हैं।

प्रस्तुत शोधलेख में महादेव कोली समुदाय के देवता एंव देवीयों के नाम और प्रकृति में मौजूद उनकी प्रतीके पशु, पक्षी और पेड के साथ संबंध को खोजने की कोशिश की गयी है। साथ हि में महादेव कोली समुदाय का इन प्रतिकों के प्रति लगाव का भी अध्ययन किया हैं।

बीजशब्द : आदिवासी, महादेव कोली, प्रतीके , देवता , देवियाँ

प्रास्ताविक

सभी संस्कृतियों में आदिवासी संस्कृति को सबसे पुरानी का सम्मान प्राप्त होता हैं I राष्ट्र के असली वारिस कहे जाने वाले आदिवासी समाज को आदिम, आदिवासी समाज के नाम से जाना जाता हैंI समाज के बुद्धिजीवीओं ने, सामाजिक कार्यकर्ताओ ने , अभ्यासकों ने एवं साहित्यकारों ने आदिवासी समाज को विभिन्न नामोसे संबोधीत किया है I रिसले , लॅस्सी , टॅलेंट , एल्विन , सेडविक , शुबर्न , ग्रिगसन , ए. व्ही . ठक्कर आदीने आदिवासियों को 'सबसे प्राचीन ' (Aboriginal) तथा 'मूल निवासी ' (Aborigines) संबोधित किया हैं I (गारे ,१९७४, पृ। ३)(जाधव और खांडेकर २०२४) हटन आदिवासियों को 'आदिम एवं आदिवासी' (Primitive Tribes) कहकर उल्लेख करते हैं I डॉ . घुर्ये आदिवासियों को तथाकथित मूल निवासी और backward hindus कहकर बुलाते है I आदिवासीयोंको सबसे पहले ' अनुसूचित जनजातीयों' का दर्जा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरने भारतीय संविधान में दिया हैं I (गारे ,१९७४, पृ। ३)(जाधव और खांडेकर २०२४)

भारत देश के कुल आबादी (१२१. ०६ करोड) के 0८. ६१ % आबादि (१०. ४२ करोड) आदिवासियों कि हैं (MTA-GOI, २०२४) (जाधव और खांडेकर २०२४) l जो की ३० गणराज्य एवं केंद्रशासित प्रदेशोंके ५५८ जिलो में बिखरी हुई हैं I उनमे सें एक महत्वपूर्ण राज्य हैं महाराष्ट्र राज्य I महाराष्ट्र राज्य में कुल ४७ अलग अलग आदिवासी जनजातीयाँ पायी जाती हैं, जो कि लोकसंख्या के तुलनात्मक दृष्टिकोन से ९. ३६% हैं l (TRTI २०२४) (जाधव और खांडेकर २०२४)

महाराष्ट्र में प्रमुखता से गोंदिया, कोकरू, भील प्रधान, हलबा- हलबी, अंध , कोकना, महादेव कोली, ठाकर ऐसे ४७ विविध जनजातियाँ पायी जाती है l (क्षीरसागर, २००३) इन सभी जनजातियों कि अपनी अपनी विशेषतः पायी जाती है l इन सभी जनजातीयों कि अपने समूह के अनुसार खुद कि बोलीभाषा , रहनसहेन , तौर-तरीके, अभिव्यक्ती , रितीरिवाज , रूढी परम्परायें और त्योहार हैं, जो कि राज्य एवं देश कि धरोवर हैं I हर जनजाती के रहन - सहन का तरिका, त्योंहार, एव रीती रिवाज अलग अलग है , किंतु सभी में एक बात सहजता से देखने को मिलती है और वह है प्रकृति के प्रति लगाव l

मनुष्य प्राणी का वर्तन अधिकतम भय एवं श्रद्धा से प्रेरित रहता है l यह वर्तन पूर्वानुभव पर और कहीं-सुनाई बातों का परिपाक होता हैं l ऐसी कहीं-सुनाई बातें और अनुभव पीढी दर पीढी संक्रमित होती हैं और बाद में

परंपरायें बन जाती हैं l प्रकृति को माता माननेवाले आदिवासी समुदाय ने समाज ,बहुजन समाज एवं सरकारों से कई बार संघर्ष किया हैं।

इतना ही नहीं बल्की प्रकृति संवर्धन के लिये आदिवासी जनजाती के लोगों ने जिम्मेदारी का विभाजन करते हूए प्रकृति के संसाधनों को और प्रकृति का संरक्षण एवं संवर्धन हेतू अपने कुल की देवी देवताएं बनाएं रखी हैं l

अकोले तहसिल में स्थित महादेव कोली और ठाकर जनजाती ने ऐसे कई पेड़- पौधे और पशुओं को अपनी देवी-देवता मान लिया हैं l

'महादेव कोली' समुदाय के देवी- देवताएँ: पेड़- पौधे (प्रकृति) संवर्धन के प्रतीक

कलमजाय: आदिवासी महादेव कोली समाज की देवियों में से कलमजाय एक प्रमुख देवी हैं l जिसका मुख्य स्थान भीमाशंकर रहा है जो कि आंबेगाव तेहसिल में स्थित हैं l अकोले तेहसिल में यह 'विठा घाट' में बसी हुई दिखाई देती हैं l भाषिक साधर्म्य कि दृष्टि से देखा जाये तो इसका सीधा संबंध आता हैं 'कलंब (कळंब)' नाम के वृक्ष से, जो की 'मीत्रागैना परविफोलिया' नाम से जाना जाता है l आदिवासी समुदाय इस वृक्ष को पवित्र मानते हुए इसकी पूजा करते हैं l इस पेड़ को काटना निषिद्ध माना जाता है l

वरसूआई / वरसुबाई: कलमजाई के बाद दुसरी महत्त्व पूर्ण देवी है 'वरसूआई' , जो की आंबेगाव तहसिल में 'सुकालवेढे' गाँव के पहाड़ी पर स्थित है l देवी के मंदिर के आसपास में 'वरस'('हेतेराफ्रेगमा क्वाड्रीकलारे '- Heterophragma quadriloculare) नाम के पेड़ हैं l यह पेड़ त्वचा से संबंधित रोगों से जुड़ा हुआ हैं और उसे काँटना, उसके उपर पैर रखना और जलाना निषिद्ध माना गया हैं l वरसू बाई के मंदिर अकोले तहसिल में बहुत सारी जगहों पर पाया जाता हैं l राजूर नाम के गाव में देवी का छोटासा मंदिर हैं।

उंबाऱ्या: उंबाऱ्या यह एक आदिवासी महादेव कोली समाज की प्रतिष्ठित देवता है l यह फुलवडे (आंबेगाव) में बसी है l यह देवता भगवान शंकर महादेव का दुसरा रुप माना गया है l उंबर (फिकस रेसिमोसा) का पौधा इसका प्रतिक है l इसी कारण वश उंबर के पेड को पूजा जाता हैं और इसे काटना निषिद्ध माना जाता है l उंबर का पेड आयुर्वेदिक दृष्टिकोन से बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है l पेड की शाखाओंसे और जड से निकलने वाला जल अमृत के समान माना गया है और हर बीमारी को ठीक करने की क्षमता रखता है ऐसी समझ है l

निंबाऱ्या / निम्बाबाई/ नीमदेव : नाम से ही पता चलता है की यह नीम (आज़ारदिराक्टा इंडिका) पेड से संबंधित है जो की मराठी में 'कडुनिंब' नाम से प्रचलित है l आदिवासी समाज परबत, घने जंगल में रहनेवला समाज है l जहाँ बारिश अधिक मात्रा में होती है l और नीम का पेड न्यूनतम मात्रा में बारिश गिरनेवाली क्षेत्र में पाया जाता है l निम के पेड के औषधी गुणधर्म को ध्यान में रखते हुए इस पेड का संरक्षण होना क्रमप्राप्त था l इसी कारण स्थानिक आदिवासी पूर्वजोंने इसे भगवान का स्वरूप माना और संरक्षित किया l आज भी कुछ कुलों के लोग इसे नीमदेवता / निंबाऱ्या के नाम से पुजते है l

वटमाई : वट का अर्थ है बरगद या 'बड़' ('फिकस बैंगालेंसिस ') का पेड़ l अहमदनगर जिल्हे के अकोले तहसिल के 'शेणीत' गाँव में 'बरगद' के पेड़ को देवी के स्वरुप में पूजा जाता है l जो की 'वटमाई ' के नाम से जानी जाती है l सिर्फ 'शेणीत' गाँव में ही नहीं तो पुरे आदिवासी महादेव कोली समुदाय में बरगद पूज्य माना गया है l 'वटपूर्णिमा ' के त्योंहार में स्त्रियाँ इस पेड़ की पूजा अपने पति के दिर्घायु के लिए करती है l

'पिपलादेवी': पीपल (फिकस रेलजिओसा) के पेड़ को महादेव कोली समुदाय देवी के रूप में पूजता है l यह पिपला देवी नाम से प्रचलित है l इसी के साथ भिल्ल जैसे जनजातियों में कुछ कुलोंका नाम पीपल के पेड़ पर रखा गया है l जो 'पिम्पले' नामसे जाने जाते है l पीपल के पेड़ के नीचे त्रिदेवोंका निवास होता है, ऐसी एक धारणा यहाँ के लोगों में देखने को मिलती है l इसी लिए पीपल के पेड़ को न केवल आदिवासी समुदाय में बल्कि आधुनिक समाज में भी पूजा जाता हैं l

कनसरा माता : यह अन्नदेवता है l 'नाचणी' या 'नागली" , बाजरा 'मिलेट' के प्रकार हैl मिलेट के पुष्पक्रम को मराठी में 'कणीस' बोला जाता है l धान काट लेने के बाद इसी 'कणीस' कि देवी माता के रूप में पूजा कि जाती है l खेत में आये धान को काटने से पहले कृतज्ञता पूर्वक उसकी पूजा की जाती है और घरमे धान की कभी कमी न हो इसलिए प्रार्थना की जाती है l हाल ही में भारत देश ने 'आंतरराष्ट्रीय मिलेट' वर्ष मनाया है l आदिवासी महादेव कोली समाज ने वर्षो पूर्व मिलेट का महत्व समझ लिया था और देशी धान प्रकारों कें संवर्धन का काम शुरू किया था l

'महादेव कोली' समुदाय के देवी- देवताएँ: पशु-पक्षी (प्रकृति) संवर्धन के प्रतीक

बाघदेवता / बाघ्या :- आदिवासी समुदाय की और एक मुख्य देवता हैं और वह गाँव देवी की आज्ञा से काम करता है ऐसे माना जाता है l जंगल में रहनेवाले इस हिंस्र प्राणी से अपने गोधन एवं परिवार की सुरक्षा के लिये प्रार्थना की जाती है l इस देवता के सम्मान में बाघबारस नाम का त्योंहार मनाया जाता हैं l पौष महीनेके बारहवे दिन यह उत्सव मनाया जाता हैं l जिसमें महादेव कोली समाज के लोग उस दिन गाँव के बाहर जंगल में चले जातें हैं और वहाँ जाकर पत्थर का चूल्हा बनाकर सुखे हुए पेड़ के पत्तें और कूडा इकठ्ठा करके चूल्हे में जलाकर भोजन तैयार करके, बाघ देवता को नैवद्यं अर्पण किया जाता है बाद में प्रसाद के तौर पर भोजन ग्रहण करते हैं और प्रकृति के सानिध्य में अपना वक्त बितातें हैं l सदियों से यह परंपरा आज भी चली आ रही है। बाघ देवता को प्राकृतिक समतोल रखनेवाला माना जाता हैl

म्हसोबा: - म्हसोबा एक जानवरों की देवता मानी गई हैं l यह गाँव के बाहर पत्थर के रुप मे दिखाई देता है l इसको सिन्दुर लगाया जाता है l म्हसोबा का सीधा संबंध भैंस से लगाया जाता हैं l कई लोग इसे महिषासुर का प्रतिक मानते हैं और अपने जानवरों को अनेक प्रकार की बीमारीयों से बचाने की प्रार्थना करते हैं l

गोचीड देवता: - पालतू जानवर जैसे की गाय, भैसं, बकरी आदी के शरीर पर पाये जाने वाला छोटासा कीटक है गोचीड. लेकीन इस गोचीड की बजहसे जानवरों को बिमारी होती है, इन किटकोंसे खून चुसनेकी बजहसे पालतु जानवरोंका वजन घटता है l इस बिमरिसे छुटकारा पाने के लिये गोचीड देवता को पूजा जाता हैं l पहाड़ी क्षेत्र में गोचीड बगले की अन्नश्रृंखला का मुख्य घटक माना जाता है

घोरपड़ाई: घोरपाड़ , बंगाल मॉनीटोर अथवा 'वारनस बेंगलांसिस' नाम से प्रचलित रेंगनेवाले प्राणी को देवीमाता का दर्जा दिया गया है l महाराष्ट्र के माजी आदिवासी मंत्री श्रीमान मधुकर पिचड़ जी की कुलदेवता है ' घोरपड़ाई l घोरपाड़ प्राणी को बहुत ही आदरपूर्वक देखा जाता है और उसकी शिकार करना एंव पकड़ना निषिद्ध माना जाता है l घोरपाड़ को देवता माननेवाले लोग उसका संरक्षण करते है l घोरपाड़ जंगल में स्थित जहरीले किटकों को और साँपों को खा जाती है और प्रकृति संतुलन में अपना दायित्व निभाती है l

नागदेवता : नाग को किसान का दोस्त भी माना गया हैl नाग खेत को हानी पहुँचानेवाले चुहोंको नियंत्रित करनेका काम करता है l नागदेवता आदिवासी महादेव कोली समाज का महत्वपूर्ण देवता है l इसका सीधा

संबंध भगवान शंकर महादेव से होने कि वजहसे इसे एक विशेष देवता माना जाता है l महादेव कोली समाज में इसी कारणवश 'नागपंचमी' त्योंहार को एक विशेष महत्त्व प्राप्त हुवा है l इस दिन स्त्री अपने भाई एंव पिता के दीर्घायु के लिए और रक्षा के लिए भगवान नाग की पूजा करती है l सभी आदिवासी समाज में नाग को देवता समज़कर उसे संरक्षित किया जाता है l

बैलदेव : महादेव कोली लोग बैल को अपना भगवान मानते है l जो की उनकी खेती का सब काम करता है और उनके गोवंश को आगे बढ़ाता है l बैल की वजहसे घर में समृद्धि आति है ऐसा माना जाता है l इसके ऋण से मुक्त होने हेतु हर साल के सावन / भादवा महीने में 'बैल पोला ' उत्सव मनाया जाता है l बैल देव का एक मंदिर अकोले तहसिल के 'बारी घाट' में स्थित है l जहाँ पर अपने बैल के दुख:दर्द दूर करने के लिए मन्नत मांगी जाती है l

'महादेव कोली' समुदाय के देवी- देवताएँ: जंगल (प्रकृति) संवर्धन के प्रतीक

रानुबाई: रान का हिंदी मतलब हैं, जंगल l जंगल में रहनेवाली एवं जंगल में मनुष्य की रक्षा करनेवाली देवी होती है रानुबाई l यह देवी हर गाँव के बाहर पत्थर के रुप मे दिखाई देती हैं l जंगल जाते समय, गाँव जाते समय इस देवी को प्रणाम करना एवं उसकी अनुमती लेना आवश्यक माना जाता हैं l यह देवी हर जगह महादेव कोली समाज की आजतक रक्षा करती आ रहीं हैं ऐसा माना जाता हैंl

दुर्गुबाई : दुर्गुबाई यह शब्द दुर्ग नाम से आया है l दुर्गुबाई के बारे में एक कथा बताई जाती है कि , दुर्गासुर नाम का राक्षस लोगोंको परेशांन करता था तो भगवान शिव ने ' ढ़ाकोबा ' का रूप लिया और एक शक्ति तैयार की जिसने दुर्गासुर का वध किया l बाद में वह शक्ति पहाड़ी पर जाकर बैठ गई l इसी देवीको लोग दुर्गूबाई के नाम से जानने लगे l दुर्गुबाई का मूल स्थान सहयाद्रि परबत श्रृंखला के जुन्नर तहसिल पर्बतों में है l यह एक जंगल से घिरी छोटीसी जगह है l दुर्गुबाई देवी की वजहसे इस जंगल को अधिक महत्व प्राप्त हुवा और यह जंगल संरक्षित हुआ है l

संशोधन परिणाम एंव चर्चा:

प्रस्तुत शोधलेख से यह बात पता चलती है ही, आदिवासी महादेव कोली समज ने प्रकृति संवर्धन के लिए पीढ़ियों से काम किया है l और आज भी प्रकृति संवर्धन के लिए अपनी संस्कृति, परंपराओं को निभाते हुए काम कर रहे हैं l बदलती जीवनशैली के साथ आज कल के आदिवासी समुदाय को प्रकृति के प्रति होने वाला दृष्टिकोण भी बदल रहा हैl इन सभी देवी देवताओं ने आज की पीढ़ी का न केवल कल के पीढ़ी से रिश्ता बनाये रखा है बल्कि प्रकृति के साथ भी अलग से रिश्ता कायम किया है l आज की आदिवासी पीढ़ी अपने पूर्वजों के ज्ञान एव प्रकृति संरक्षण की सोच से न केवल प्रभावित है बल्कि प्रकृति सरंक्षण हेतु ऋणी भी है l आदिवासी महादेव कोली समाज की दादा परदादा के बची पीढ़ि योंके साथ यह ज्ञान समाप्त न हो जाये और प्रकृति संवर्धन की ये श्रंखला न टूटे इसलिए आज की नयी उभरती पीढ़ियों ने इसे संजोगकर रखना अनिवार्य है l

संदर्भ :

(टिपणी: शोधालेख के लिए इकट्ठा की जानकारी आदिवासी महदेव कोली समाज के व्यक्तियोंके साथ की चर्चा से मिली हुई है और इसका प्रचलित भाषा के साथ संबंध खोजा गया है l इसी कारन वश संदर्भ संख्या कम है l)

1. गारे गोविंद : महाराष्ट्र के आदिवासी : महादेव कोली।, आदिम साहित्य प्रकाशन , खडकी, (१९७४), आवृत्ती ४ थी (२०१९) पुणे. पृ। ३
2. गारे गोविंद :महाराष्ट्रातील आदिवासी जमाती (सामाजिक व सांस्कृतिक मागोवा) , कॉन्टिनेन्टलप्रकाशन, विजयनगर, पुणे -३०, पृl १
3. गुप्ता रमणिका : आदिवासी विकास से विस्थापन, राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१८ , पृl १२
4. जाधव अलका और खांडेकर सजित : "स्वतंत्र भारत में महाराष्ट्र के साहित्य में आदिवासी साहित्यकारों का योगदान - एक अवलोकन", शोध प्रभा, श्री लाल बहादूर शास्त्री विद्यापीठ ISSN ०९७४-८९४६ Vol . २ No. १: २०२४ पृ. ८७
5. क्षीरसागर मनोज , भारतीय जमती , काल , आज अणि उदया - वर्मा , आर। सी। अनुवाद , प्रकाशन विभाग माहिती अणि प्रसारण विभाग भारत सरकार, २००३, पृ l २४३

6. Tribal Research and training institute (TRTI) Government of Maharashtra , 30 June 2024, https://trti.maharashtra.gov.in/statewiseTotalTribal
7. Ministry of Tribal Affairs , Government of India ,30 June 2024 https://dashboard.tribal.gov.in/